International Journal of Physical Education, Sports and Health 2023; 10(1): 217-221

P-ISSN: 2394-1685
E-ISSN: 2394-1693
Impact Factor (RJIF): 5.38
IJPESH 2023; 10(1): 217-221
© 2023 IJPESH
www.kheljournal.com
Received: 17-11-2022
Accepted: 27-12-2022

सुरेश कुमार चौधरी
शोधार्थी शारीरिक शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि. रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. दिलीप कुमार सोनी
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
सुरेश कुमार चौधरी
शोधार्थी शारीरिक शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि. रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

अनूपपुर जिले में जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता पर छात्रों के लिए खेल गतिविधियों के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान का समीक्षात्मक अध्ययन

सुरेश कुमार चौधरी एवं डॉ. दिलीप कुमार सोनी

सारांशः
प्रस्तुत शोध पत्र जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता पर छात्रों के लिए खेल गतिविधियों के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान का समीक्षात्मक पर आधारित है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के 82.50 प्रतिशत प्रचार्य, 75.00 प्रतिशत शिक्षक, 55.00 प्रतिशत अभिभावक व 63.75 प्रतिशत छात्रों के अभिमतानुसार माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि हुई है। शोध क्षेत्र के 77.50 प्रतिशत प्रचार्य, 72.50 प्रतिशत शिक्षक, 53.00 प्रतिशत अभिभावक व 64.50 प्रतिशत छात्रों के अभिमतानुसार शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था है। खेलों के माध्यम से सामाजिक समरसता बढ़ाने से अर्न्तवैयक्तिक एवं अर्न्त समुदाय, सामंजस्यता का विकास होता है जिसे मानव की आत्मछवि के साथ सम्पूर्ण समुदाय पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

कूट शब्द : अनूपपुर जिला, सामाजिक गतिशीलता, खेल गतिविधि, जनजाति, छात्र, सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान।

1. प्रस्तावना

जनजातीय जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व में दूसरा स्थान है, प्रथम स्थान पर अफ्रीका है। भारत में कुल जनसंख्या का 8.08 प्रतिशत प्रतिनिधित्व जनजातीय जनसंख्या का है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आदिकाल से जनजातियां वन, पहाड़ों एवं नदी घाटी के मैदानो में निवास करती आ रही है। अतः इन्हे वनजाति, वनवासी, आदिवासी, आदिम जाति, वनराज, गिरिराज आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

वैदिक एवं संस्कृत साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि आर्यों के आगमन के पूर्व से भारत में अनेकों आदिम मानव समुदाय (Indigenous human groups) निवास करते चले आ रहे थे। आर्यो की सभ्यता विकसित थी जिस वजह से इन आदिम जातियों को आर्यों ने भील, कोल, किरात, किन्नर, बन्जारा, आदिवासी, वनवासी, राक्षस, असुर, राक्षस, वनराज, निषाद, भत्स्य आदि नामों से सम्बोधित किया। (पन्द्रों, सुनीता 2016)[1] इन्ही नामों को अन्य धार्मिक एवं पैराणिक ग्रन्थों में भी देखा गया।

ब्रिटिश हुकूमत ने शासन की सुविधा के लिये भारत में जो जातियां भारतीय वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत नही आती थीं, उन्हे ट्राइब के नाम से सम्बोधित किया। ये जनजातियां दूरस्थ वनों, पहाड़ियों, पर्वतो एवं समुद्रतटीय क्षेत्रों मे निवास करती थी। वर्तमान भारत के विभिन्न क्षेत्रों में, जनजातीय कार्य विभाग, भारत शासन के अनुसार कुल 613 जनजातियां निवास करती है।

भारत शासन एवं प्रान्तीय शासन के प्रयासों द्वारा इन आदिवासियों को देश मुख्य धारा से जोड़ने के लिए निरन्तर प्रयास किये जा रहे है औवर अन्य समाजों के समान आदिवासी समाज भी विकास एवं परिवर्तन की दिशा में अग्रसर है। कुछ अत्यधिक दूररथ क्षेत्रों को छोड़कर अधिकांश क्षेत्रो के आदिवासी समाज में भी अत्यधिक परिवर्तन देखा जा रहा है। जनजातीय समाज में आ रहे परिर्वतन के मुख्य कारण इस प्रकार है सकारात्मक प्रभावीकरण, संस्कृतिकरण, पुनर्जनजातिकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, पश्चिमीकरण एवं इन तमाम तथ्यों के क्रियाषील होने के परिणाम स्वरूप जनजातियों की जीवनशैली में अत्यधिक परिवर्तन आया है। जनजातियों में आये इस परिवर्तनव की दो दृष्टियों से देखा जा सकता है प्रथम सकारात्मक पक्ष एवं द्वितीय नकारात्मक पक्ष। जनजातीय समुदायों की सभ्यता–संस्कृति एवं जीवनषैली पर प्रभाव मुख्यतः जनजातीय सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक संबंध, विवाह, संस्कृति, आर्थिक क्रियाकलापों एवं कार्य पद्धति में परिवर्तन देखा जा रहा है।

जनजातियों की अपनी स्वयं की सामाजिक व्यवस्था होती है जो कि गोत्र या संगोत्रता (Kinship) पर आधारित होती है।

एक ही गोत्र के सभी आदिवासी एक परिवार, वंष, कुल, उपजाति एवं एक ग्राम केरूप में निवास करते है। ये सभी सुख एवं दुःख को मिलकर झेलते हैं। इनमें संगोत्रीय संबंध अत्यधिक गहन होते है। समुदाय के किसी भी निर्णय में सम्पूर्ण गोत्र या गोत्र के प्रमुख व्यक्तियों को शामिल किया जाना अनिवार्य होता है, कोई भी निर्णय इनके बिना संभव नही होता है। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक कार्यो में परस्पर सहयोग से ही कार्य किया जाता है।

खेल के दौरान बालक अनेकों ऐसे अनुभव करता है, जो उसे घर, स्कूल, किताब कभी नहीं दे सकतीं। वह अपना वातावरण स्वयं अन्वेषित करता है। साथियों, अभिभावकों तथा अन्य परिचितों के बारे में धारणा स्थापित करता है। पशु–पक्षियों जानवरों के जीवन के बारे में जानकारी करता है। प्रकृति को करीब से देखकर उसके बारे में ज्ञान बढ़ाता है। खेल के अनुभव उसके मौलिक अनुभव होते हैं, जो उस पर बड़ों द्वारा प्रत्यारोपित नहीं होते। अनुभव उसके सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ाते हैं तथा बौद्धिक विकास के क्षेत्र में भी सहयोग करते हैं।

बालक के खेल उसे विभिन्न शारीरिक क्रियात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक गुण प्रदान कर मानसिक योग्यताएँ प्रदान करके भाषा के विकास में सहयोग कर उसके जीवन में आने वाले विभिन्न समायोजन को आसानी से स्थापित करने में सहायता देते हैं। निर्णय लेना, समस्या का समाधान करना बालक खेल के मैदान में सीख लेता है। परिवार में, स्कूल में तथा अन्य सामाजिक क्षेत्रों में बालक के सामाजिक, नैतिक गुण उसका शारीरिक सौष्ठव उसका समायोजन सरल कर देता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

खेल के माध्यम से बालक अपनी भविष्य में अपनाई जाने वाली भूमिका का अभ्यास भी करते हैं। स्वयं अपने लिए तय की गई भूमिकाओं की तुलना खेल ही खेल में अन्य बालकों द्वारा अपनाई गई भूमिकाओं से करते हैं तथा इस प्रकार उन्हें अनेक विकल्प प्राप्त हो जाते हैं। इन विकल्पों में से उचित भूमिका चुनाव करने में खेल अत्यन्त सहायक होते हैं। खेल बच्चों की कल्पना और रचनाशीलता प्रेरित करती है, क्योंकि यह सोचने के लिए, आस–पास होने वाली घटनाओं को समझने के लिए मौके देता है और वे विभिन्न निर्देशों, चीजों और हालातों से समझौता करते है जो सोच–विचार की क्षमता प्रेरित करते है। खेल मानव जीवन के विकास का आधार एवं बाल जीवन का प्राण तत्व और मूल अधिकार है। खेल के माध्यम से छात्र–छात्राएँ अपनी नैसर्गिक प्रवृत्तियों एवं अपने संवेगों के प्रबंधन को उत्तम दिशा देते है। खेलों का महत्व मानव सामाजिक जीवन में अनेक दृष्टिकोणों से शिक्षात्मक उपागम के रूप में हैं। मानवीय मूल्य भावनात्मक विकास, धैर्य, अनुशासन, मित्रता, सहयोग, ईमानदारी, प्रतिस्पर्धा एवं नेतृत्व व्यवहार जैसे गुण, उपदेशों से अधिक छात्र–छात्राएँ खेलों के माध्यम से सहज रूप से सीख लेते है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया हैः–

- माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान का अध्ययन करना।
- शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँः

परिकल्पनाओं के निर्माण के बिना शोध कार्य करना लगभग असम्भव है। शोधार्थी को परिकल्पना को निर्मित करने के पूर्व यह भी जानना आवश्यक होता है कि वह किस प्रकार की परिकल्पना का चयन अपने शोध कार्य करने हेतु कर रहा है, क्योकि विभिन्न वैज्ञानिकों ने परिकल्पना के कई प्रकार बनाए है, जैसे–मैकयुगन ने परिकल्पनाओं को दो भागो में विभक्त किया है। सार्वभौमिक परिकल्पना (Universal Hypothesis) एवं अस्तित्व मूलक परिकल्पना (Existeutial Hypothesis) जबकि कार्लिंगर ने तीन प्रकार की परिकल्पनाओं का उल्लेख किया हैः– सरल परिकल्पना, नकारात्मक परिकल्पना एवं गुप्त सम्बन्ध व्यक्त करने वाली परिकल्पना। चेम्बरलिन ने एक अन्य प्रकार की बहुला परिकल्पना का उल्लेख किया है। रोलेल्ड फिशर ने उपर्युक्त परिकल्पनाओं से अलग शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis) को स्वीकार किया है। इस परिकल्पना को सांख्यिकीय परिकल्पना भी कहते हैं।

शोधार्थी की मान्यता है कि इस अध्ययन के पश्चात् निम्नवत तथ्य प्राप्त होगे–

1. माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि हुई है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था है।

5. शोध समस्या का सीमांकनः

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला अनूपपुर है। इसके अन्तर्गत 4 विकासखण्ड–अनूपपुर, पुष्परागढ़, जैतहरी व कोतमा है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित हाईस्कूल व हायरसेकेण्ड्री विद्यालय इस अध्ययन के अंतर्गत शामिल होंगे। न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 80 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य व 5–5 अभिभावक कुल 200 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

6. अध्ययन विधिः

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये–डमंदए प्रतिशत (%), S.D., 't' ज्मेज आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरणः

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों का एकत्रीकरण अनूपपुर जिले में जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता पर छात्रों के लिए खेल गतिविधियों के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान का समीक्षात्मक अध्ययन करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती

है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा, एच.के. एवं सिंह, टी.के. (1988)[2], पाण्डेय, के.पी., (1985)[3], गुप्ता एस.पी. (2001)[4], मेहता, सी. (1970)[5], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[6] बाना, कमलेश एम.एल. एवं पीटरसन, ए.जे. (2012)[7], चौबे, एम. पाठक, कुमार, जे. एवं द्विवेदी, ए.पी. (1986)[8] एवं सिंह, गोपेश कुमार (2014)[9] और पाण्डेय, राकेश कुमार (2015)[10]ने शोध विधि एवं जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता पर छात्रों के लिए खेल गतिविधियों के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान का समीक्षात्मक अध्ययन से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. अनूपपुर जिले का सामान्य परिचयः

मध्यप्रदेश का अनूपपुर जिला 15 अगस्त 2003 को नया जिला बना हैं। सम्पूर्ण विश्व के मानचित्र पर इस जिले की स्थिति 22°07′ से 23°25′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°10′ से 82°10′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से अनूपपुर जिले का क्षेत्रफल 3669 वर्ग कि.मी. है। जिले के अन्तर्गत कुल तहसीलों की संख्या 04 है– पुष्पराजगढ़, अनूपपुर, जैतहरी व कोतमा है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्याः

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

तालिका संख्या 1: माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि हुई है।					
			हाँ		नहीं		पता नहीं	
			संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
1.	प्राचार्य	40	33	82.50	04	10.00	03	7.50
2.	शिक्षक	80	60	75.00	12	15.00	08	10.00
3.	अभिभावक	200	110	55.00	40	20.00	50	45.00
4.	विद्यार्थी	800	510	63.75	140	17.50	150	18.75
योग		1120	713	63.66	196	17.50	211	18.84
काई वर्ग (χ^2)			463.86					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2
0-05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5-99
0-01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9-21

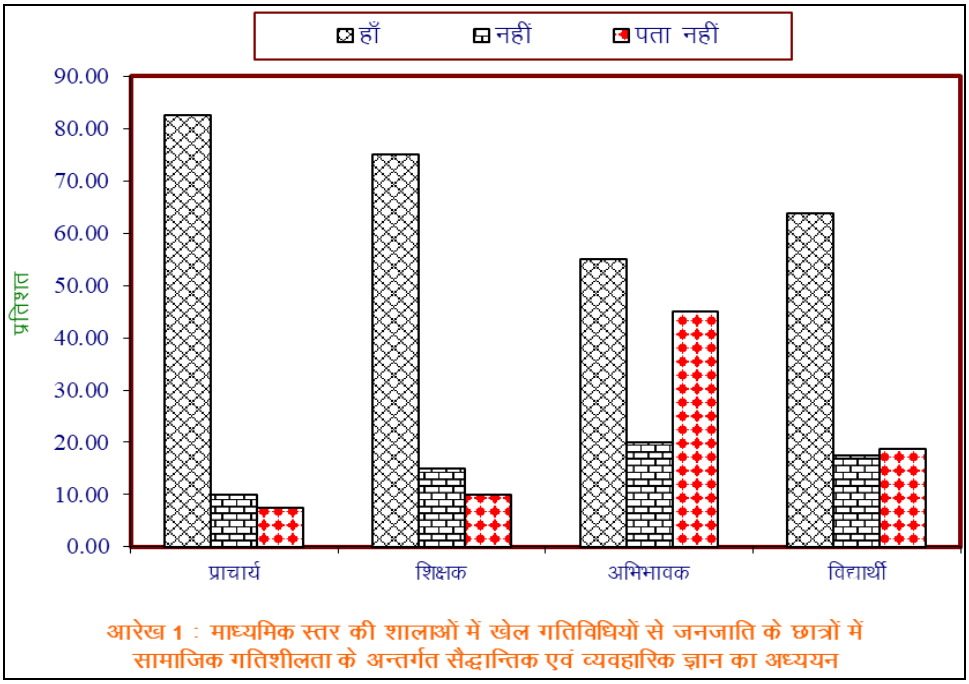

आरेख 1 : माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान का अध्ययन

विश्लेषण एवं व्याख्याः

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान की जानकारी प्राचार्य, शिक्षक, अभिभावक एवं छात्रों साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गयी है।

शोध क्षेत्र के 82.50 प्रतिशत प्रचार्य, 75.00 प्रतिशत शिक्षक, 55.00 प्रतिशत अभिभावक व 63.75 प्रतिशत छात्रों के अभिमतानुसार माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि हुई है।

शोध क्षेत्र के 63.75 प्रतिशत अभिमत के अनुसार माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि हुई है।

शोध क्षेत्र के 17.50 प्रतिशत अभिमत के अनुसार माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि नहीं हुई है।

शोध क्षेत्र के 18.84 प्रतिशत अभिमत के अनुसार माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान के संबंध में पता नहीं है।

शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान से संबंधित आंकड़ों का 'काई' वर्ग द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार तीनो समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 463.86 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः

5.99 एवं 9.21 से अधिक है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है, कि माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि हुई है। यह परिकल्पना के संगत है। अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

सारणी क्रमांक 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था है।					
			हाँ		नहीं		पता नहीं	
			संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
1.	प्राचार्य	40	31	77.50	05	12.50	04	10.00
2.	शिक्षक	80	58	72.50	13	16.25	09	11.25
3.	अभिभावक	200	106	53.00	41	20.50	53	26.50
4.	विद्यार्थी	800	516	64.50	138	17.25	146	18.25
योग		1120	711	63.48	197	17.59	212	18.93
काई वर्ग (χ^2)			458.41					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

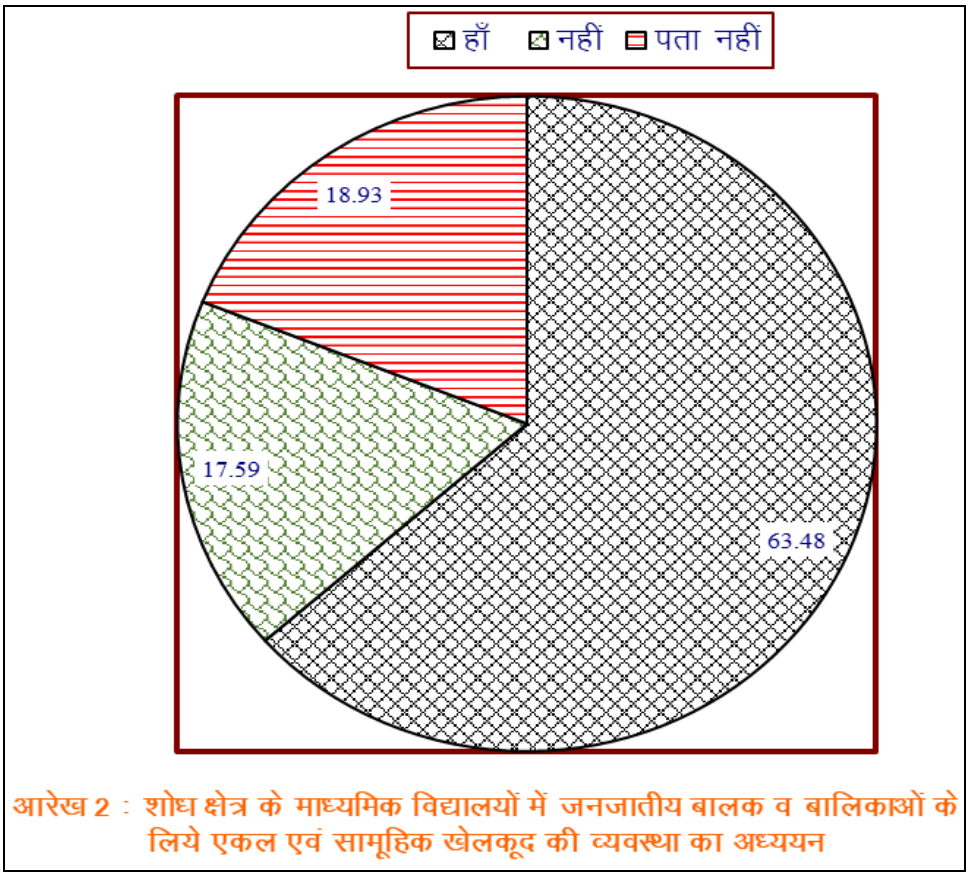

आरेख 2 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था का अध्ययन

विश्लेषण एवं व्याख्या:

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था की जानकारी प्राचार्य, शिक्षक, अभिभावक एवं छात्रों साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गयी है।

शोध क्षेत्र के 77.50 प्रतिशत प्रचार्य, 72.50 प्रतिशत शिक्षक, 53.00 प्रतिशत अभिभावक व 64.50 प्रतिशत छात्रों के अभिमतानुसार शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था है।

शोध क्षेत्र के 63.48 प्रतिशत अभिमत के अनुसार शोध क्षेत्र की सभी शालाओं में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था है।

शोध क्षेत्र के 17.59 प्रतिशत अभिमत के अनुसार शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था नहीं है।

शोध क्षेत्र के 18.93 प्रतिशत अभिमत के अनुसार शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था के संबंध में पता नहीं है।

शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था से संबंधित आंकड़ों का 'काई' वर्ग द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार तीनो समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृश्टिकोण से सार्थक अन्तर है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 458. 41 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमषः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक

विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था है। यह परिकल्पना के संगत है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

निष्कर्षः

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्नानुसार हैं–

1. शोध क्षेत्र के 82.50 प्रतिशत प्रचार्य, 75.00 प्रतिशत शिक्षक, 55.00 प्रतिशत अभिभावक व 63.75 प्रतिशत छात्रों के अभिमतानुसार माध्यमिक स्तर की शालाओं में खेल गतिविधियों से जनजाति के छात्रों में सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि हुई है।
2. शोध क्षेत्र के 77.50 प्रतिशत प्रचार्य, 72.50 प्रतिशत शिक्षक, 53.00 प्रतिशत अभिभावक व 64.50 प्रतिशत छात्रों के अभिमतानुसार शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय बालक व बालिकाओं के लिये एकल एवं सामूहिक खेलकूद की व्यवस्था है।

अतः बच्चों के सर्वांगीण विकास में खेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन खेलों द्वारा बालकों में त्वरित निर्णय क्षमता, वस्तुओं की जानकारी, समायोजन, समन्वय, सदभाव, साहस, सहआस्तित्व जैसे गुणों का स्वभाव में स्वतः ही विकास हो जाता है।

राज्य में शारीरिक शिक्षा एवं खेलों के प्रति संस्कृति विकसित किए जाने हेतु विभिन्न विभागों के माध्यम से व्यापक जनजागरूकता अभियान चलाया जाएगा जिससे समाज के सभी वर्गों को जोड़ते हुए खेल से होने वाले लाभ एवं तत्स्वरूप स्वास्थ्य संवर्धन के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध करायी जाएगी एवं शिक्षा विभाग के विशेष सहयोग से सभी को खेल मैदान तक लाने एवं योग को अपनाने का प्रयास किया जाएगा।

सन्दर्भ ग्रंथः

1. पन्द्रों, सुनीता–जनजातीय समाज में सामाजिक परविर्तन पर प्रभाव, Historicity Research Journal. 2016;3(1):1-4.
2. शर्मा, एच.के. एवं सिंह, टी.के.–''स्वास्थ्य शिक्षा एवं शरीर विज्ञान'', पण्डित प्रकाशन पण्डित हाऊस, जयपुर, 1988, पृ.सं. –33.
3. पाण्डेय, के.पी.–''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1985.
4. गुप्ता एस.पी.–''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
5. मेहता, सी.–'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
6. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
7. पीटरसन, ए.जे.–हॉकी खिलाड़ियों के मनोवैज्ञानिक और खेल विशिष्ट विशेषताओं, डॉक्टरेट शोध कार्य, ज्यूरिख स्विटजरलैण्ड अध्यापन विश्वविद्यालय, 2012.
8. चौबे, एम. पाठक, कुमार, जे. एवं द्विवेदी, ए.पी.–''शारीरिक शिक्षा के मूलाधार'', कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना–दिल्ली, 1986, पृ.सं. 189.
9. सिंह, गोपेश कुमार.–''इलाहाबाद जनपद के हॉकी खिलाड़ियों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति का समीक्षात्मक–निदानात्मक अध्ययन'', अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.), 2014.